Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC) e-ISSN: 2582-2004
Volume 01, Issue 01
DOI: 10.46523/jarssc.01.01.09 Open Access

फांस उपन्यास में बदलते परिवेश में किसानों की आत्महत्या का कारण

अमित कुमार
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर

उपन्यासकार संजीव द्वारा लिखित उपन्यास 'फांस' आज भूमण्डलीकरण के युग में कर्ज में डूबकर आत्महत्या करने वाले भारतीय किसानों को केन्द्र में रखकर लिया गया है। उपन्यास में वर्तमान समय में कृषि करने वाले किसानों को किस प्रकार फसलों में नुकसान होता है जिससे यह भारतीय कृषक वर्ग जो कि अन्नदाता कहा जाता है आज स्वयं एक-एक दाने लिए परेशान है। इसी को यथार्थता के साथ प्रस्तुत किया गया है। उपन्यास के सम्बन्ध में नामवर सिंह का कथन है कि - ''अपनी इस साहित्यिक विरासत के आधार पर आज यही कहने को जी चाहता है कि भूमण्डलीकरण के आक्रामक दौर में नष्ट होती हुई ग्राम संस्कृति और आत्महत्या के लिए विवश किसानों को केन्द्र में रखकर किया जाने वाला कथा सृजन ही अपनी सार्थकता प्रमाणित कर सकता है।''[१]

इस पूरे उपन्यास में भारतीय किसानों पर एक तरह की बहस छिड़ी हुई दिखाई देती है जहां लगातार किसानों द्वारा कर्ज में डूबकर आत्म हत्याएं की जाती हैं लेकिन मीडिया तथा सरकारें इनकी तरफ ध्यान नहीं देती है। एक जगह ऐसी ही बहस उपन्यास में है ''शुरूआत शकुन ने की-''इस देश का किसान कर्ज में ही जन्म लेता है, कर्ज में ही जीता है, कर्ज में ही मर जाता है।''

Received: 03.09.2018 Accepted: 28.09.2018 Published: 02.10.2018

बाप के हाथ-पाँव पीटते हुए छाती को अपना ज्ञान बघारने का मौका मिला ''कारपोरेट-सोशल रेस्पोंसिबिलिटी इन देशी-विदेशी सेठों की जिम्मेवारी आपूर्ति उतनी ही होती है जितने में इसका ग्राहक बचा रहे। किसी को भी किसानों की आत्महत्या की फिकर नहीं, किसी को भी नहीं।''.....पिछले बरस सात हजार किसानों ने आत्महत्या की थी। अखबार, रेडियो, टीवी, सबने अफीम खाली, खबर तक न हुई।''[२]

वैसे यह सही भी है कि भारत के लगभग ८०: किसानों का कर्ज सरकार द्वारा इसलिए भी माफ नहीं हो पाता है क्योंकि व बैंकों से कर्ज न लेकर अपने गांव या इलाके के सूदखारों से कर्ज लेते हैं जिन्हें वे पीढ़ियों तक नहीं चुका पाते हैं। २००६ के चुनावों के समय सरकार ने अपनी घोषणा के अनुसार ७२ हजार करोड़ रूपये का कर्ज माफ किया लेकिन इससे उन किसानों को कोई फायदा नहीं हुआ। जिन्होंने बैंक से कर्ज लिया ही नहीं था-'' ज्यादातर लोगों ने तो गाँव के सूदखोरों से कर्ज लिया है। उनका खून साहूकार चूसता रहे और ७२ हजार करोड़ का आंकड़ा सरकारी दान के रूप में छापकर सरकार अपनी पीठ थपथपाती रहे।''[३]

वर्तमान वैश्विक भूमण्डलीकृत दौर में आज भले ही प्रौद्योगिकी यंत्रों का आगमन हो गया जिससे कृषि करना आसान हुआ है किन्तु किसानों में खासकर मध्यम वर्गीय किसानों को इससे बहुत लाभ नहीं हुआ है बल्कि इससे उसकी खेती करने की मंसा में और मंहगाई आ गयी है जिससे वह कर्ज लेने को विवश हुआ है। आज अकेले भारत में लाखों किसान कर्ज न भर पाने के कारण आत्महत्याएं कर रहे हैं। इन किसानों की आत्महत्याओं और संजीव के उपन्यास के सन्दर्भ में मैनेजर पाण्डेय कहते हैं कि- ''.....भारत में अब

Received: 03.09.2018 Accepted: 28.09.2018 Published: 02.10.2018

तक तीन लाख से अधिक संख्या में किसानों ने आत्महत्या की है। यह मानवता के इतिहास की एक भयावह त्रासदी है और अमानवीय समाज व्यवस्था का भीषण अपराध भी। इस त्रासदी और अपराध के प्रतिरोध की प्रवृत्ति पैदा करने वाला यह उपन्यास 'फांस' प्रेमचन्द के कथा साहित्य की प्रगतिशील परंपरा का आज की स्थिति में विकास करेगा। संजीव ने इससे पहले भी ऐसी कहानियां और उपन्यास लिखे हैं। यह उपन्यास संजीव की मूलगामी और अग्रगामी कथा-दृष्टि का एक प्रमाण है।''[४]

आज की इस बाजारवादी व्यवस्था में हमारी सरकारें चाहे जितनी बातें किसानों के हित में करें किन्तु खेती के लिए काम में आने वाली वस्तुओं की महंगाई और अपने परिवार की जरूरतों की वजह से भारतीय किसान लगातार टूटता जा रहा है। इस कारपोरेट समय में सरकार यदि किसानों के हित में कुछ करना चाहती है तो वह थी किसी कम्पनी के माध्यम से करती है जिसका सर्वप्रमुख उद्देश्य होता है लाभ कमाना-''उदारीकरण के चलते सरकार का रवैया ही कारपोरेट वाला हो चुका है-बिल्कुल ठुस्स यांत्रिक। कारपोरेट कल्चर या बहुराष्ट्रीय कम्पनियां जाहिर तौर पर किसी बड़ी पूंजी की प्रसूत होती है, बड़ी पूंजी बाजर में लाभ कमाने के उद्देश्य से आती है। उसकी सामाजक जिम्मेवारी सिर्फ इतनी होती है कि ग्राहक या उपभोक्ता जिन्दा रहे। इन्हें या इनके प्रतिनिधि नेताओं को जमीन की गुणवत्ता, सिंचाई की प्रकृति और पैदावार से कोई मतलब नहीं।''[५]

लेखक संजीव ने अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा में रहते हुए इस उपन्यास का लेखन किया है इसलिए इसके मुख्य विषय में विदर्भ (महाराष्ट्र) के यवतमाल जिले के विभिन्न गांवों के किसानों द्वारा की जाने वाली आत्महत्याओं का यथार्थपरक लेखन के साथ ही साथ

Received: 03.09.2018 Accepted: 28.09.2018 Published: 02.10.2018

सम्पूर्ण किसानों द्वारा की जाने वाली आत्महत्याओं का यथार्थ किया है स्वयं उन्हीं के शब्दों में–''अपुन का देश भी क्या कमाल का देश ठहरा। ठीक ही कहता है माना, थार की धूल अमेरिका में गिरती है और विदर्भ की आत्महत्या की खबर पूरी दुनिया में! विदर्भ ही क्यों पंजाब, गुजरात, आन्ध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, बुन्देलखण्ड की भी।''[६]

इस प्रकार उपन्यासकार संजीव ने 'फांस' उपन्यास के माध्यम से किसानों द्वारा की जाने वाली आत्महत्याओं की त्रासदी पर यथार्थपरक लेख किया ही है साथ-साथ उसे प्रमाणित करने के लिए पिछले कुछ वर्षों में की गई आत्महत्याओं का विवरण भी दिया है। निश्चय ही उपन्यास यदि कहा जाये तो प्रेमचन्द की प्रगतिशील परम्परा से आगे निकलता है। जिसमें उन्होंने किसानों की ग्लोबल होती वैश्विक समस्याओं अथवा त्रासदी का यथार्थ चित्रण किया है।

Received: 03.09.2018 Accepted: 28.09.2018 Published: 02.10.2018

संदर्भ ग्रन्थ-सूची

१. संजीव- फांस, नामवर सिंह का कथन फ्लैश बैक

२. संजीव- फांस, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण २०१८,

पृष्ठ-१५

३. वही- पृष्ठ-६६-६७

४. संजीव- फांस, मैनेजर पाण्डेय का कथन फ्लैश बैंक से

५. संजीव-फांस, पृष्ठ-१०६

६. वही-पृष्ठ-१५३

Received: 03.09.2018 Accepted: 28.09.2018 Published: 02.10.2018